UGC Approved Journal No - 47299
Volume 13 Issue III September 2023 ISSN 2249-8907

Vaichariki

A Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed International Research Journal

Chief Editor:
Dr. Manoj Kumar

UGC Approved Journal No – 47299
(IIJIF) Impact Factor - 5.192

ISSN 2249 – 8907

VAICHARIKI

A Multidisciplinary *Peer Reviewed* Refereed International Research Journal

Volume 13 | Issue III | 30- September 2023

Chief Editor : Dr. Manoj Kumar
Department of Sanskrit
B.R.A. Bihar University
Muzaffarpur

E-mail : vaichariki@gmail.com

www.vaicharikibihar.com

- भारतीय आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ 131-139
  संदीप कुमार मिश्र, शोध छात्र, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
- पूर्वांचल के संग्रहालयों में संग्रहीत दुलर्भ बौद्ध प्रतिमाएँ 140-143
  डॉ. सतीश चन्द यादव, वरिष्ठ शोध अध्येता महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, देवास रोड, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
- भारतीय संस्कृति - अनेकता में एकता का जीवन दर्शन 144-147
  बिनिता उराँव, शोधार्थी छात्रा, दर्शनशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
- कैफी आज़गी : एक परिचय : व्यक्तित्व एवं प्रगतिवादी कृतित्व 148-152
  डॉ० विनीता सिंह , स० अ० प्राथमिक विद्यालय जोरौरा वि० ख० – बैतालपुर जिला – देवरिया (उ० प्र०)
- माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का लिंग एवं अधिवास के सन्दर्भ में अध्ययन 153-156
  विवेक, शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र०।
  डॉ० राजेश कुमार सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र०।

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का लिंग एवं अधिवास के सन्दर्भ में अध्ययन

विवेक *
डॉ० राजेश कुमार सिंह **

शिक्षा एक त्रिध्रुवीय सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शैक्षिक पाठ्यक्रम सम्मिलित होते हैं। वर्तमान शैक्षिक प्रक्रिया छात्र केन्द्रित है। सम्पूर्ण शैक्षिक आयोजन छात्र को केन्द्रित करके संचालित होते हैं। वर्तमान में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील मार्गदर्शक के रूप में हो गयी है जो पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम में छात्र की योग्यता, क्षमता एवं गति के अनुसार सीखने और अपेक्षित अधिगम परिणाम प्राप्त करने में छात्र की सहायता करता है। शिक्षा के आरम्भिक स्वरूप में शिक्षक केन्द्र में था और छात्र उसका अनुगामी, शिक्षक द्वारा सिखाया गया कोई भी ज्ञान पाठ्यवस्तु था। बाद में शिक्षा को शिक्षक–शिक्षार्थी तक केन्द्रित कर इसे द्विध्रुवीय प्रक्रिया कहा गया। वर्तमान सीखे जाने वाले ज्ञान की उपयोगिता के कारण पाठ्यक्रम को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाने लगा है और शिक्षा को शिक्षक–शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम तक विस्तारित कर दिया गया। शिक्षा एक सतत् एवं आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसके विभिन्न स्तर और स्वरूप हैं। शिक्षा की व्यापक प्रक्रिया औपचारिक, अनौपचारिक एवं निरौपचारिक माध्यमों से सतत् गतिशील रहती है। शिक्षा का औपचारिक माध्यम बालक के विकासात्मक अवस्था से जुड़ा होता है जो मुख्यतः प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तरों में विभाजित है। माध्यमिक स्तर को बालक के जीवन निर्माण की शिक्षा का स्तर माना जाता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों के मनोभावों को नियंत्रित करते हुए उनकी रूचि, जिज्ञासा एवं अधिगमम स्तर को दृष्टिगत रखते शैक्षिक गतिविधियाँ संचालित करने का दायित्व शिक्षक को निर्वाह करना होता है। इस गुरूतर दायित्व का निर्वाह वह तभी कर सकता है जब उसमें अपने कार्य के प्रति संतुष्टि भाव हो। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में कार्य संतुष्टि की स्थिति को उनके लिंग एवं अधिवास के आधार पर इस अध्ययन में आकलित किया गया जिसमें कार्य संतुष्टि मापनी के द्वारा प्रतिक्रिया प्राप्त कर उसका विश्लेषण किया गया जिसमें यह प्राप्त हुआ कि माध्यमिक शिक्षकों के कार्य संतुष्टि पर उनके लिंग एवं अधिवासीय संरचना का सार्थक प्रभाव नहीं होता है। यद्यपि शिक्षकों की अपेक्षा शिक्षिकाओं में तथा ग्रामीण की अपेक्षा नगरीय शिक्षकों में संतुष्टि का स्तर उच्च प्राप्त हुआ। माध्यमिक शिक्षकों में कार्य संतुष्टि को बढ़ाये जाने, उनमें अपने व्यवसाय के प्रति रूचि पैदा करने, सामाजिक एवं स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप बालकों के गुणों का सर्वांगीण विकास करने तथा शिक्षकों में अपने कार्य निष्पादन व जवाबदेहिता का विकास करने हेतु उनमें संतुष्टि भाव को बढ़ाये जाने की आवश्यकता महसूस की गयी।

मूल शब्द : माध्यमिक शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ, कार्य संतुष्टि, ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश एवं तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत अध्ययन के मूल शब्द हैं।

---

* शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र०।

** असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र०।

भूमिका :

शिक्षक एक निर्धारित परिवेश में छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करता है। शिक्षण संस्थाओं में एक अनुकूल वातावरण सृजित कर शिक्षक छात्रों में ज्ञान बुद्धि, क्षमता एवं मूल्यों का विकास करता है जिससे वह अपने पर्यावरण के साथ अपना अभूतपूर्व समायोजन स्थापित करता है। विद्यालय में छात्र को परावलम्बन से स्वावलम्बन का गुण सिखाया जाता है। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ बालक को भावी जीवन के लिए कुछ विशिष्ट क्रियाएँ एवं आदतें इस उद्देश्य से सिखायी जाती है कि वह भावी जीवन को समाजोपयोगी एवं वैयक्तिक लक्ष्यों के अनुरूप विकसित कर सके। इसके लिए उसे सामाजिक व्यवस्था एवं उसकी आवश्यकता की समझ विकसित कर उसे सामाजिक रूप से परिपक्व बनाया जाता है। इस कार्य में शिक्षा ही सर्वप्रमुख भूमिका निर्वाह करती है। शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है किन्तु यह औपचारिक रूप में एक निश्चित अवधि पाठ्यक्रम एवं स्थान पर सम्पादित है। इस औपचारिक शिक्षा के मुख्यतः तीन स्तर है– प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा। प्राथमिक शिक्षा को आधारभूत शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा को जीवन शिक्षा एवं उच्च शिक्षा को तार्किक चिन्तन एवं दक्षता विकास की शिक्षा कहा जाता है। माध्यमिक शिक्षा के माध्यम से बालक को अपने जीवन में सफलता एवं उच्चतम् मूल्यपरकता को विकसित करते हुए उसे भावी जीवन के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षक विद्यार्थी के गुणों के निर्माण का कुशल शिल्पी होता है वह अपने ज्ञान, अनुभव और शिक्षण कौशल से बालक का सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास करता है। किसी राष्ट्र की प्रगति, उसकी समृद्धि एवं उसकी सांस्कृतिक विरासत को बनाये रखने में माध्यमिक शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्योंकि शिक्षित राष्ट्र, समृद्ध राष्ट्र का सूचक होता है इसलिए सर्वाधिक बल माध्यमिक शिक्षा पर दिया जा रहा है। माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा देश के प्रत्येक बालक को मिल सके इसके लिए सरकार व समाज के प्रबुद्ध व समर्थ लोगों की भूमिका निर्धारित की गयी और विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं के द्वारा इसे सर्वसुलभ बनाने का प्रयास किया गया ताकि राष्ट्र की उन्नति एवं उत्कृष्टता हो सके। माध्यमिक शिक्षा की उपयोगिता को बतलाते हुए स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि– मेरे विचार से जन साधारण की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप है और हमारे पतन के कारणों में से एक है। अतः शिक्षा प्रत्येक बालक को दिया जाना राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है।

शिक्षक शिक्षा प्रणाली का प्रमुख ध्रुव है। विशेषकर माध्यमिक शिक्षा में उसकी भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वह बालक के माता–पिता एवं गुरू की संयुक्त भूमिका में उसकी देखभाल, उसकी प्रतिभा की पहचान, उसमें स्कूल के प्रति आकर्षण, उसे नवीन ज्ञान से जोड़ने एवं उसमें रूचि, जिज्ञासा एवं शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करता है। इसके लिए उसे बालक के मानसिक स्तर, सांवेगिक स्थिति एवं मनोदैहिक पक्षों को दृष्टिगत रखते हुए उसमें रूचि एवं जिज्ञासा की वृद्धि का आयोजन करना पड़ता है। ऐसा वह तभी कर सकता है जब उसे इन चुनौतियों के प्रति तैयारी हो, वह अपने कार्य के प्रति सन्तुष्टि भाव रखता हो। वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा में नित नये प्रयोगों ने यह संकेत दिया है कि माध्यमिक शिक्षा की स्थिति सही नहीं है। इसका एक कारण शिक्षक का अपने शिक्षण के प्रति औपचारिकता का भाव और अपने व्यावसायिक दायित्व का समुचित निर्वाह न कर पाना माना जा रहा है। इसके कारणों में उनके जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के प्रति तनाव आदि को माना जा रहा है। आज माध्यमिक शिक्षकों पर सजगता, संलग्नता एवं औपचारिकता आदि के अनेक आरोप लगाया जा रहा है इसमें उनका अपने कार्य के प्रति सन्तुष्टि भाव का न होना, उच्च आकांक्षा एवं अभिलाषा के कारण शिक्षण के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों में लिप्त होना समाज में निरन्तर अन्तःक्रिया एवं संवाद स्थापित न कर पाना तथा उनकी स्थितियों को न समझ पाने के कारण अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न हो रही है वर्तमान में माध्यमिक शिक्षकों के कार्य में सन्तुष्टि भाव का उनके लिंग एवं अधिवास के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य :

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय शिक्षकों की कार्य संतुष्टि की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ :

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में वर्णानात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में जौनपुर जनपद के ग्रामीण एवं नगरीय माध्यमिक विद्यालयों को चयनित किया गया है। न्यादर्श के रूप में इन क्षेत्रों के 4 ग्रामीण एवं 4 नगरीय माध्यमिक विद्यालयों से 20 शिक्षक एवं 20 शिक्षिकाओं का चयन सामान्य यादृच्छिक न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है। शोध उपकरण के रूप में डॉ0 मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों की गणना हेतु मध्यमान मानक विचलन एवं टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण :

सारणी संख्या–1

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का सांख्यकीय विश्लेषण

चर	N	M	S.D.	D	σD	t	सार्थकता
माध्यमिक स्तर के शिक्षक	20	213.48	16.37	3.39	4.88	0.69	0.05 स्तर पर असार्थक
माध्यमिक स्तर की शिक्षिका	20	216.87	14.48				

उक्त सारणी अनुरूप माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 213.48 तथा मानक विचलन 16.37 है जबकि माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 216.87 तथा मानक विचलन 14.48 है। परिगणित टी–अनुपात 0.69 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वतंत्रयांश 38 के लिये सी.आर. सारणीमान 2.65 से कम है जो असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को स्वीकृत कर दिया गया। अतः माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का स्तर समान है। इसका सम्भावित कारण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्यानुभव में समानता, उनके शैक्षणिक अनुभवों में समानता, विद्यालय की स्थानीय परिस्थितियों में समानता, उनको प्राप्त सुविधाओं में समानता, विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों में समानता, शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को प्राप्त होने वाले वेतनमान एवं प्रोत्साहन की स्थितियों में समानता आदि हो सकते हैं।

सारणी संख्या–2

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का सांख्यकीय विश्लेषण

चर	N	M	S.D.	D	σD	t	सार्थकता
माध्यमिक स्तर के ग्रामीण शिक्षक	20	214.99	15.21	4.53	4.43	1.09	0.05 स्तर पर असार्थक
माध्यमिक स्तर के नगरीय शिक्षक	20	210.46	12.73				

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण शिक्षकों के कार्य संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 214.99 तथा मानक विचलन 15.21 है जबकि माध्यमिक स्तर के नगरीय शिक्षकों के कार्य संतुष्टि सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 210.46 तथा मानक विचलन 12.73 है। परिगणित टी–अनुपात 1.09 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वतंत्रयांश 38 के लिये सी.आर. सारणीमान

2.65 से कम है जो असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय शिक्षक के कार्य संतुष्टि कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को स्वीकृत कर लिया गया। अतः माध्यमिक स्तर ग्रामीण एवं नगरीय शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का स्तर समान है। इसका सम्भावित कारण ग्रामीण ए नगरीय शिक्षकों के कार्यानुभव में समानता, उनके शैक्षणिक विषयवस्तु में समानता, विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों की स्थिति में समानता, उनको प्राप्त सुविधाओं में समानता, विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों में समानता, शिक्षकों को प्राप्त होने वाले वेतनमान एवं प्रोत्साहन की स्थितियों में समानता आदि हो सकते हैं।

निष्कर्ष :

उक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है यद्यपि शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि शिक्षकों से उच्च है तथा ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि नगरीय शिक्षकों से न्यून है किन्तु सार्थकता स्तर पर यह मान सार्थक नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत हैं–

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का स्तर समान पायी गयी।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय शिक्षकों के कार्य संतुष्टि सार्थक अन्तर नहीं पाया अर्थात् माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का स्तर समान पायी गयी।

सन्दर्भ :

1. राजीव मालवीय (2012) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा. शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज.
2. रमन बिहारी लाल (2010) : शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. एस0पी0बरनवाल (2012) : अध्यापक शिक्षा. नवीन प्रकाशन. कानपुर.
4. मालती सारस्वत एवं एस0एल0 गौतम (2008): भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास. आलोक प्रकाशन, लखनऊ.
5. जे0सी0 अग्रवाल (2009): उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षा. अग्रवाल पब्लिकेशन, लखनऊ
6. जी0पी0 गोयल (2012) : अध्यापक शिक्षा की चुनौतियां. नवीन प्रकाशन आगरा.
7. आर0ए0 शर्मा (1996) : शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

***